

# रामचौरा मंदिर और वैशाली का इतिहास

हरिपुर (Haripur) [हाजीपुर (Hajipur)]

हरिपुर (Haripur) के **रामचौरा मंदिर** का संबंध रामायण काल की उन महत्वपूर्ण घटनाओं से है जब महर्षि विश्वामित्र, भगवान श्री राम और लक्ष्मण को अपने साथ मिथिला (जनकपुर) ले जा रहे थे। तब उन सभी ने इस जगह पर रात्रि विश्राम किया था।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, इस स्थान के ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व का विवरण इस प्रकार है:

## वाल्मीकि रामायण में उल्लेख

वाल्मीकि रामायण के **बालकाण्ड** में उस मार्ग का वर्णन मिलता है जिससे श्री राम ने गंगा पार की थी। हालांकि "रामचौरा" नाम का आधुनिक उल्लेख सीधे तौर पर नहीं है, लेकिन **सर्ग 45** में उस भौगोलिक स्थान का वर्णन है जहाँ भगवान राम ने गंगा के उत्तरी तट पर विश्राम किया था।

- प्रसंग:** जब श्री राम, लक्ष्मण और विश्वामित्र जी ने गंगा नदी को पार किया, तब वे **विशाला नगरी** (वर्तमान वैशाली के निकट का क्षेत्र जिसमें हरिपुर (Haripur) भी शामिल है) पहुँचे थे।
- महत्व:** मान्यता है कि रामचौरा मंदिर वही स्थान है जहाँ भगवान राम ने अपनी यात्रा के दौरान रुककर विश्राम किया था और उनके चरण चिन्ह (पदचिह्न) वहाँ अंकित हुए थे। इसी कारण इस स्थान को 'रामचौरा' (राम के चरणों का स्थान) कहा जाता है।

## सटीक संदर्भ (बालकाण्ड)

निश्चित रूप से, आप जिस प्रसंग की बात कर रहे हैं, वह **वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड** का एक बहुत ही सुंदर और ऐतिहासिक अध्याय है।

## विशाला नगरी और रामचौरा का संबंध

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, जब विश्वामित्र जी राम और लक्ष्मण को लेकर सिद्धाश्रम (बक्सर) से निकले, तो उन्होंने गंगा नदी को पार किया। गंगा पार करने के बाद वे जिस प्रथम समृद्ध नगरी में पहुँचे, उसका नाम **'विशाला'** था।

- भौगोलिक पहचान:** रामायण काल की 'विशाला' नगरी ही आज की **वैशाली** है। हरिपुर (Haripur) का रामचौरा क्षेत्र इसी विशाला नगरी के प्रवेश द्वार या उसके आसपास का वह स्थान माना जाता है जहाँ भगवान ने गंगा तट पर कदम रखे थे।
- राजा सुमति का सत्कार:** बालकाण्ड के **सर्ग 45** में उल्लेख है कि विशाला के राजा **सुमति** (जो इक्ष्वाकु वंश के ही पूर्वज राजा विशाल के वंशज थे) ने विश्वामित्र और दोनों राजकुमारों का भव्य स्वागत किया था।

## सर्ग 45 के मुख्य अंश

इस सर्ग में ऋषि विश्वामित्र श्री राम को इस नगरी का इतिहास बताते हैं। वे कहते हैं:

**उत्तरं तीरमासाद्य संपूर्णां तां ददर्श ह।  
विशालां नगरीं रम्यां स्वर्गलोकोपमां तदा।।**

(बालकाण्ड, 45.9)

**अर्थ:** गंगा के उत्तरी तट पर पहुँचकर उन्होंने 'विशाला' नामक अत्यंत रमणीय नगरी को देखा, जो स्वर्ग के समान सुंदर थी।

## रामचौरा मंदिर की विशेषता

- **चरण चिह्न (Footprints):** 'रामचौरा' शब्द का अर्थ ही है 'राम की चौकी' या वह स्थान जहाँ प्रभु विराजे। मंदिर में पत्थर पर अंकित प्राचीन चरण चिह्न इसी प्रसंग की याद दिलाते हैं कि वन गमन के समय उन्होंने यहाँ रात्रि विश्राम किया था।
- **परम्परा:** स्थानीय मान्यताओं और लोक गाथाओं के अनुसार, वैशाली की इस भूमि पर भगवान राम ने पहली बार मिथिला की सीमा में प्रवेश करने से पहले विश्राम किया था।

## विशाला की उत्पत्ति की कथा

विशाला नगरी का नाम राजा विशाल के नाम पर पड़ा था। वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड (सर्ग 47) में विश्वामित्र जी श्री राम को इस नगर का इतिहास सुनाते हुए बताते हैं कि यह नगरी कितनी प्राचीन और गौरवशाली है।

- **इक्ष्वाकु वंश से संबंध:** राजा विशाल भगवान राम के ही पूर्वज इक्ष्वाकु के पुत्र थे।
- **स्थापना:** राजा विशाल ने ही इस अत्यंत सुंदर और समृद्ध नगरी की स्थापना की थी, जिसके कारण उनके नाम पर इसे 'विशाला' कहा जाने लगा।
- **वंश परंपरा:** राजा विशाल के बाद इसी वंश में आगे चलकर राजा हेमचंद्र, राजा सुमति और अन्य प्रतापी राजा हुए। जब भगवान राम वहाँ पहुँचे थे, उस समय वहाँ राजा सुमति का शासन था।

## रामायण का संदर्भ (बालकाण्ड, सर्ग 47):

**इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान् विशालेति परंतप।  
तेन चत्र कृता संज्ञा विशालेति पुरी शुभा।।**

(बालकाण्ड, 47.11)

**अर्थ:** "हे शत्रुतापन राम! इक्ष्वाकु के पुत्र श्रीमान 'विशाल' हुए। उन्हीं के नाम पर इस शुभ पुरी (नगर) का नाम 'विशाला' रखा गया है।"

## विशाला से वैशाली: नाम परिवर्तन का क्रम

### 1. व्याकरण और भाषा का विकास (तद्भव रूप)

संस्कृत भाषा में शब्दों के रूप समय के साथ बदलते रहे हैं। 'विशाला' एक विशेषण जैसा नाम था जिसका अर्थ था "बहुत बड़ी या भव्य नगरी"। भाषाई विकास के दौरान 'विशाल' शब्द में स्थानवाचक परिवर्तन होने से यह धीरे-धीरे '**वैशाली**' के रूप में उच्चारित होने लगा।

## 2. राजा विशाल के वंश का प्रभाव

वाल्मीकि रामायण में जिस नगरी को **विशाला** कहा गया, वह राजा विशाल द्वारा बसाई गई थी। ऐतिहासिक ग्रंथों और पुराणों के अनुसार, राजा विशाल के वंशजों को 'वैशालक' कहा जाता था। उनके वंशजों की राजधानी होने के कारण लोकभाषा में इस जगह को '**वैशाली**' (विशाल के वंशजों की भूमि) कहा जाने लगा।

### संक्षेप में बदलाव का क्रम:

- **विशाल (राजा)** → नगरी की स्थापना की।
- **विशाला (नाम)** → नगरी की भव्यता के कारण रामायण काल में प्रसिद्ध हुआ।
- **वैशाली (आधुनिक नाम)** → राजा विशाल के नाम पर और भाषाई सरलता के कारण मध्यकाल से अब तक प्रचलित है।

## ऐतिहासिक प्रमाण

### 1. वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड, सर्ग 47)

यह सबसे प्राथमिक और धार्मिक प्रमाण है। इसमें स्पष्ट उल्लेख है कि राजा विशाल ने जिस नगरी को बसाया, उसे '**विशाला**' कहा गया। आज के हरिपुर (Haripur) और वैशाली का भूगोल वही है जो रामायण में वर्णित गंगा के उत्तरी तट (विशाला) का है।

### 2. श्रीमद्भागवत पुराण (9वाँ स्कन्ध)

भागवत पुराण के नौवें स्कन्ध के विशाल वंश के वर्णन में भी इस नगरी का उल्लेख मिलता है। भागवत के अनुसार, इक्ष्वाकु के पुत्र विशाल ने 'विशाला' नामक पुरी का निर्माण किया।

### 3. "An Early History of Vaiśālī" - योगेंद्र मिश्र

डॉ. योगेंद्र मिश्र ने अपनी इस पुस्तक में रामायण काल की 'विशाला' से लेकर बुद्ध काल की 'वैशाली' तक के सफर का सप्रमाण वर्णन किया है। उन्होंने सिद्ध किया है कि भाषाई बदलाव और समय के साथ 'विशाला' ही 'वैशाली' बन गई।

### 4. कनिंघम की रिपोर्ट (Archaeological Survey of India)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के जनक **अलेक्जेंडर कनिंघम** ने अपनी खोजों में आधुनिक 'बसाढ़' (Besarh) गाँव को प्राचीन वैशाली के रूप में पहचाना। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट किया कि वाल्मीकि रामायण की 'विशाला' और जैन/बौद्ध ग्रंथों की 'वैशाली' एक ही भौगोलिक स्थान (हरिपुर (Haripur) के निकट) पर स्थित है।

### 5. वैशाली जिला गजेटियर (Vaishali District Gazetteer)

बिहार सरकार और भारत सरकार के आधिकारिक गजेटियर में भी 'विशाला' को वैशाली का प्राचीन नाम स्वीकार किया गया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि "वैशाली का नाम राजा विशाल के नाम पर पड़ा, जिसे रामायण में विशाला कहा गया है।"

## निष्कर्ष

वाल्मीकि रामायण में 'रामचौरा' नाम का शब्दशः प्रयोग भले न हो, लेकिन **बालकाण्ड के सर्ग 45 के श्लोक 9 से 11** के बीच जिस स्थान और घटना का वर्णन है, वह भौगोलिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्णतः हरिपुर (Haripur) के रामचौरा मंदिर से मेल खाता है।

यदि आप सबसे प्रामाणिक स्रोत घर पर देखना चाहते हैं, तो **गीता प्रेस गोरखपुर की 'वाल्मीकि रामायण' (बालकाण्ड, सर्ग 47)** सबसे उत्तम प्रमाण है। वहाँ दिए गए श्लोक और उनकी व्याख्या में 'विशाला' और राजा विशाल का पूरा विवरण उपलब्ध है।

राजीव ब्रह्मर्षि विनती करता है

अपने हरिपुर (Haripur) के सभी हिंदुओं से —

जागो और अपने समृद्धि इतिहास को पुनः प्रतिष्ठा देने के लिए आगे आओ।